International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 121-124

# भारत में उच्च शिक्षा की चुनौतियां

डॉ. राकेश कुमार झाम्ब*

**सार**

*हम जानते हैं कि राष्ट्रों की आर्थिक सफलता सीधे शिक्षा प्रणाली से जुड़ी हुई है। शिक्षा एक राष्ट्र की ताकत है और विकसित राष्ट्र अवश्य रूप से एक शिक्षित राष्ट्र होता है। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है। स्वतंत्रता के बाद से, भारत एक विकासशील राष्ट्र के रूप में शिक्षा के क्षेत्र प्रगति कर रहा है। यद्यपि भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली को इस प्रगति के लिए काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है लेकिन इन चुनौतियों को दूर करने के लिए बहुत सारे अवसर भी हैं। उच्च शिक्षा प्रणाली की ओर बेहतर बनाने के लिए इसमें कॉलेजों की भूमिका की आवश्यकता है और इस पर उभरता हुआ वैज्ञानिक शोध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारत को कुशल और उच्च शिक्षित लोगों की आवश्यकता है जो हमारी अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ा सके। भारत के लिए हमारे देश को एक विकासशील राष्ट्र से विकसित राष्ट्र में स्थानांतरित करना बहुत आसान है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली में चुनौतियों को उजागर करना और उन्हें इंगित करना है।*

***शब्दकोशः*** *उच्च शिक्षा प्रणाली, विकासशील राष्ट्र, अर्थव्यवस्था, विकसित राष्ट्र, शिक्षित राष्ट्र।*

---

**प्रस्तावना**

संयुक्त राज्य और चीन के बाद भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली छात्रों के विषय में दुनिया की तीसरी सबसे इकाई है। भारत, भविष्य में सबसे बड़े शिक्षा केन्द्रों में से एक होगा। स्वतंत्रता के बाद से विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। पिछले चार वर्षो में स्कूलों में एक चौंका देने वाला नामांकन प्रकट हुआ है। उच्च शिक्षा में भी निजी क्षेत्र की भागीदारी से शिक्षा के क्षेत्र में भारी परिवर्तन देखा गया है। आज भारत में 60 प्रतिशत से अधिक उच्च शिक्षा संस्थान है। लेकिन फिर भी भारत विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों का निर्माण करने में विफल रहा है।

आज ज्ञान ही शक्ति है। जिसके पास जितना अधिक ज्ञान है, वह उतना ही अधिक सशक्त है। हालांकि भारत को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा में बढ़ते निवेश के बावजूद यहां की 25 फीसदी आबादी अभी भी अनपढ़ है, केवल 15 प्रतिशत भारतीय छात्र हाई स्कूल तक पहुंचते है और केवल 7 प्रतिशत स्नातक कर पाते हैं।

भारत में शिक्षा की गुणवत्ता प्राथमिक या उच्च शिक्षा की तुलना में काफी खराब है। भारत के उच्च माध्यमिक संस्थान केवल पर्याप्त सीटों की पेशकश करते है। भारत की 7 प्रतिशत कॉलेज उम्र की आबादी के लिए, देश भर में 25 प्रतिशत शिक्षण पद खाली है और 57 प्रतिशत कॉलेज के प्रोफेसरों के पास या तो मास्टर या पीएचडी की डिग्री नहीं है।

---

* सहायक आचार्य, एबीएसटी (वाणिज्य), राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान।

इन चुनौतियों के बावजूद भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में काबू पाने के लिए समान रूप से अवसर है और यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने की क्षमता रखती है। भारत दूसरों को अत्यधिक कुशल लोग प्रदान करता है और भारत के लिए अपने देश को विकासशील देश से एक विकसित देश में परिवर्तित करना आसान है।

## भारत में उच्च शिक्षा क्षेत्र का विकास

शिक्षा प्रणाली जैसे–जैसे बढ़ती है और विविधतापूर्ण होती है और समाज उस की गुणवत्ता के बारे में अधिक चिंतित रहता है। शिक्षा की गुणवत्ता को मापना चुनौतीपूर्ण है। यू ंतो भारत हमेशा से विद्वानों और शिक्षार्थियों का देश रहा है। प्राचीन काल में भी भारत को सर्वमान्य माना जाता था। वर्तमान में भी केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें प्रतिभाओं को निखारने का प्रयास कर रही है। उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की संख्या पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। भारतीय शिक्षा क्षेत्र में यूजीसी मुख्य शासी निकाय है जो मानकों को लागू करता है, सरकार को सलाह देता है और केन्द्र व राज्यों के बीच समन्वय में मदद करता है।

दुनिया भर की सरकारें और विश्वविद्यालय भारतीय समकक्षों के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर रहे हैं और अनुसंधान सहयोग, संयुक्त डिग्री और अन्य पहलुओं के लिए बड़ी योजनाएँ बना रहे हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत अब दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणाली है, जिसमें 50,000 शैक्षणिक संस्थानों में लगभग 38 मिलियन छात्र हैं और 2035 तक सकल नामांकन दर को वर्तमान 26.3 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक दोगुना करने का लक्ष्य है। 2020 में जारी नई राष्ट्रीय नीति (एनईपी) से भी रुचि बढ़ी है, जो माध्यमिक शिक्षा के बाद बड़े निवेश और पहली बार अंतर्राष्ट्रीयकरण पर जो देने के साथ भारत के शीर्ष विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण सुधार का वादा करती है। महत्वपूर्ण रूप से, एनईपी दुनिया के लिए एक उच्च विनियमित और बड़े पैमाने पर बंद शैक्षणिक प्रणाली को खोलने का वादा करता है। पारंपरिक भारतीय स्वदेशी विचारधारा एक खुले द्वार पर प्रतिस्थापित की जाएगी।

2020 एनईपी में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के लिए बड़ी मात्रा में धन देने का वादा किया गया। लेकिन महत्वपूर्ण आवंटन अभी तक वितरित का वादा किया गया लेकिन महत्वपूर्ण आवंटन अभी तक वितरित नहीं किए गए है और एनईपी मुख्य रूप से केन्द्र सरकार द्वारा शासित मानकों और प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है और यह उन राज्यों को ज्यादा प्रभावित नहीं करता जहां उच्च शिक्षा का बड़ा हिस्सा रहता है।

## भारत में उच्च शिक्षा में चुनौतियां

भारत में इतने वर्षो बाद भी भारत की शिक्षा प्रणाली पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाई है। इस दौरान विभिन्न सरकारें बदली और उन्होंने शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने और विभिन्न शिक्षा नीतियों को लागू करने की कोशिश की लेकिन वे पर्याप्त नहीं थे। यूजीसी लगातार काम कर रहा है और उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। परंतु अभी भी हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में बहुत सारी समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारत के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में समस्याएं आ रही है उनमें से कुछ मुख्य समस्याएं है जैसे– नामांकन, उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात केवल 15 प्रतिशत है जो कि अपर्याप्त है। भारत में महिलाओं व पुरूषों के बीच उच्च शिक्षा में ळम्त् काफी अलग होता है जो शिक्षा प्रणाली के भीतर एक महत्वपूर्ण असंतुलन को प्रदर्शित करता है।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना भारत में सबसे बड़ी चुनौती है। हालांकि सरकार इस पर ध्यान दे रही है लेकिन अभी भी भारत के विश्वविद्यालय दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों में अपना स्थान बनाने की स्थिति में नहीं है। भारत की शिक्षा प्रणाली में इन्फ्रास्ट्रक्चर एक ओर बड़ी चुनौती है। राजनीतिक हस्तक्षेप भी उच्च शिक्षा के स्तर को लगातार बढ़ने से रोकता है। छात्र राजनीति में अपना करियर बनाने के लिए अपने मूलभूत उद्देश्यों को भूल जाते है। इसी तरह फैकल्टी की कमी भी कई वर्षो से शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही है।

भारतीय उच्च शिक्ष्ज्ञा आज अत्यधिक जहरीले राजनीतिक और सामाजिक वातावरण में मौजूद है जैसा कई देशों में होता है और इसका मूलभूत प्रभाव है कि अन्य देशों की शैक्षणिक संस्थानों को संभावित सहयोग और भागीदारी पर कैसे विचार करना चाहिए। भारतीय उच्च शिक्षा राज्य और केन्द्रीय दोनों स्तरों पर दशकों से नाटकीय रूप से कम रही है। हाल के वर्षो में अधिकांश महत्वपूर्ण विस्तार उन कॉलेजों में हुआ है जिन्हें कोई प्रत्यक्ष सरकारी धन नहीं मिलता है हालांकि चुनिंदा संस्थानों में छात्रों का एक छोटा हिस्सा आवश्यकता–आधारित सहायता या जाति या अन्य स्थिति के आधार पर छात्रवृति के लिए पात्र है। निजी विश्वविद्यालय क्षेत्र हाल के वर्षो में महत्वपूर्ण वृद्धि देख रहा है। लेकिन छात्रों के नामांकन और भौतिक बुनियादी ढांचे के मामले में अधिकांश निजी विश्वविद्यालय केवल बड़े कॉलेज है।

## उच्च शिक्षा व्यवस्था में सुधार

भारतीय शिक्षा प्रणाली को विश्व स्तर पर अधिक प्रासांगिक और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए शिक्षा स्तर में प्राथमिक से उच्चतर शिक्षा तक नवीन और परिवर्तनकारी दृष्टिकोण बनाने की आवश्यकता है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में छात्रों को आकर्षित करने के लिए एक अच्छा बुनियादी ढांचा होना चाहिए। सरकार को शीर्ष अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों और भारतीय उच्च शिक्ष संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए। स्नातक छात्रों को ऐसे पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाने चाहिए जिनमें वे उत्कृष्टता प्राप्त करें, विषय का गहन ज्ञान प्राप्त करें ताकि उन्हें भर्ती के बाद नौकरी मिल सके। सार्वजनिक और निजी दोनों विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को राजनीतिक संबद्वता से दूर करना चाहिए। पक्षपात, पैसा बनाने की प्रक्रिया शिक्षा प्रणाली से बाहर होनी चाहिए। उच्च शिक्षा में बहु–विषयक दृष्टिकोण होना चाहिए ताकि छात्रों का ज्ञान केवल अपने विषयों तक ही सीमित न हो। उद्यम शिक्षा और उद्यमिता, उद्योग के साथ संबंध, अनुसंधान कौशल और व्यवसायिक कौशल में भी छात्रों का रूझान बढ़ाने और इसकी उपलब्धता करवाने की व्यवस्था भी करनी चाहिए जिससे छात्र अपना पूर्ण विकास कर सकें।

## निष्कर्ष

शिक्षा संस्थान को संपूर्ण बनाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति के शरीर, मन और चरित्र का निर्माण होता है और इसके सर्वागीण व्यक्तित्व का विकास होता है। पिछले कई दशकों में भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है। आज भारत दुनिया के विकासशील देशों में से एक है। लेकिन अभी भी भारत की आबादी का बड़ा हिस्सा निरक्षर है और एक बड़ी संख्या में बच्चे प्राथमिक शिक्षा तक नहीं ले पा रहे हैं। देश का विकास पूर्ण रूप से नहीं होने का महत्वपूर्ण कारण जनसंख्या है। हालांकि भारत को उच्च शिक्षा में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ है लेकिन इन चुनौतियों से निप्टना और उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत विशाल मानव संसाधन क्षमता का देश है परंतु इस क्षमता का सही उपयोग करना चाहिए। उच्च शिक्षा में विकास के अत्यधिक अवसर मिलते है लेकिन इन अवसरों का लाभ कैसे प्राप्त करें और उन्हें दूसरों के लिए कैसे सुलभ बनाया जाए, यह चिंता का विषय है। भारत में संस्थानों की संख्या और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने की जरूरत है। भविष्य की आवश्यकताओं के लिए वित्तिय संसाधनों, इक्विटी, मानक, गुणवत्ता, प्रासांगिकता, बुनियादी ढांचा और अंत में जवाबदेही पर फिर से विचार करने की तत्काल आवश्यकता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, आर. (2012), हरियाणा सामान्य ज्ञान – एक परिचय, नई दिल्ली : रमेश पब्लिशिंग हाउस।
2. ओबराय, एम. (2010), भारत संक्षिप्त विवरण, नई दिल्ली : न्यू विशाल पब्लिकेशन।
3. कौल, लोकेश (2004), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ली : पब्लिकेशन हाउस।
4. त्यागी, गुरसरन दास (2012), भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
5. त्रिपाठी, केसरी नन्दन एवं आलोक कुमार (2012), उत्तरप्रदेश : एक समग्र अध्ययन, इलाहाबाद बौद्धिक प्रकाशन।

6. सिंह, अरूण कुमार (2003), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन।

7. बाजपेयी, एल.बी. (2000), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक प्रवृत्तियाँ, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।

8. एम.एच.आर.डी. (2016), एनुअल रिपोर्ट, डिपार्टमेन्ट ऑफ हायर एज्युकेशन, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।

9. एम.एच.आर.डी. (1989), नेशनल पॉलिसी आन एजुकेशन–1986, पीऑए–1990, न्यू देहली गवर्नमेंट ऑफ इन्डिया प्रेस।

10. सिंह, आर.पी., (2010), ऑन ऑपनिंग अ 'वर्ल्ड' क्लास युनिवसिर्टी, यूनिवसिर्टी न्यूज, नई दिल्ली

11. सिंह, जे.डी. व अन्य, (2001), विद्यालय प्रबन्ध व शिक्षा की समस्याएं, जयपुर : रिसर्च पब्लिकेशन्स।

12. तिलक, जन्धाला (2007), हायर एजुकेशन इन इंडिया फंडिंग एक्सेस, क्वालिटी और इक्विटी, न्यूपा, नई दिल्ली।

❖◆❖